



This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit. The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website
<https://kksu.co.in/>

Digitization was executed by NMM

<https://www.namami.gov.in/>

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi
Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade
Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi
<https://egangotri.wordpress.com/>

18-433

कविकुलगुरु कालिदास स
विश्वविद्यालय ग्रंथालय, र

हस्तलिखित संग्रह

दाखल क्र..M.489 विष
नांव- अपराध क्षमापनसूत्र
लेखक/लिपीकार श्रीशंकराचार्य
पृष्ठ...1.....
काळ पूर्ण/अपूर्ण .

EL-1N

मन्त्रः॥

॥ नमंत्रं नोयंत्रं तदपि न जाने स्तुतिमहो न वा न
॥ नंध्यानं तदपि न जाने स्तुतिकथाः ॥ न जाने
॥ मुद्रा स्तुतदपि न जाने विलयनं परं जाने मा
॥ तः स्वदनुसरणं कष्टहरणं ॥ १ ॥ विधेरशा
॥ ने नद्रविणविरहेणालसतया विधेया राक
॥ त्वात् न वचराणो यो यच्चित्ते रकृत् ॥ तदेत
॥ तद्व्यंजननिसकलोद्धारिणि शिवे पुत्रो
॥ जायेत क्वचिदपि कुमातानमवति ॥ २ ॥ जग
॥ मातमतिस्तवचराणसेवानी चित्तानवा दतंद
॥ वीद्रविणमपि कृत्यस्तवमया ॥ तथापि
॥ मयिनिरुपमं यत्नकरुषे कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि
॥ कुमातानमवति ॥ ३ ॥ पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि
॥ बहवः संतिसरलाः परं तेषां मध्ये विरलतर
॥ लोहं तवस्तुतः ॥ मदीयोयं यागः समुचितमिदं
॥ वोतवशिर्वे कुपुत्रा जायेत ॥ ४ ॥ परित्यक्ताद
॥ बान्दुवि विधविधसेवा बुलतया मया पं
॥ वाशीतमधिकमपनीतं तु वयसि ॥ इदानीं
॥ ने या ह्यनवयदिकुपानाति

॥ लोकोदर ॥ कथा मित्र ॥
 ॥ पाको जल्यो को भवति मधु पाको भवति रानि
 ॥ राते कोरं को विहरति चिरं कोटिकनेकः ॥ तवा
 ॥ पत्न्यो कर्णे विरा तु मनुवत् ॥ लोमिदं ज्ञनः
 ॥ को जानीते ज्ञननि जपनीय जपविधो ॥ ६ ॥
 ॥ वितामस्मा लेपो गरलमशानं दिक् पटध
 ॥ रोज्ञटाधारिकं गजगपातहा शिपतिः ॥ कपा
 ॥ लीपु तेशा मजति जगदी गैसैम शौकपदवी
 ॥ मृगानि त्वस्या गिग्रहण परिचाटी फलमि
 ॥ २ ॥ ७ ॥ नमोऽस्य काक्ष्या भवविभववांछा च
 ॥ नवमेन विज्ञानापेक्षारशी मुनि सखे वा
 ॥ पिनपुनः ॥ अतस्त्वा संयाचे जननि ज्ञन
 ॥ नया तु ममेव मृडा नीरुहा पि विविदि
 ॥ वज्रवानीति जपतः ॥ ८ ॥ नाराधिता सिवि
 ॥ धिना विविधोपचारैः विवृक्ष्य चित्तनन
 ॥ ये निवृत्तं वः शि ॥ सामेवमेव यदि किंच
 ॥ नमय्यनाथे धत्से कृपा मुचितं संवयरंतवैव
 ॥ ९ ॥ आधत्से मयः स्मरणं त्वदीयं करोमिद

Handwritten text in Devanagari script on aged, damaged paper. The text is arranged in approximately 20 horizontal lines across two sections. The paper is heavily stained, discolored, and has several large holes and tears, particularly along the left and bottom edges. The ink is dark and somewhat faded, making some characters difficult to read. The overall appearance is that of an ancient manuscript fragment.

॥ श्री ॥

॥ मन्त्रं पूर्वस्थादिशि ॥

॥ गैकरुणाएवासि ॥ नेतुदृष्टं समभाव

॥ यथाः शुधातु सतजिनमी स्मरति ॥

॥ जगदवविचित्रमन्त्रेकिं परिपूर्णाकिरुता

॥ ति वेमयि ॥ अथराध परंपरा वृत्तं न हि

॥ माता समुपेक्षते सत ॥ ११ ॥ इति श्रीमच्छ

॥ कर्माचार्यविरचितमपराधतोत्रे सवृत्ते

॥ शुभं न वक्तु ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥

॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥

॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥

॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥

॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥

॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥

॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥

॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥

[OrderDescription]
,CREATED=11.10.19 14:04
,TRANSFERRED=2019/10/11 at 14:07:06
,PAGES=6
,TYPE=STD
,NAME=S0002028
,Book Name=489
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,FILE4=00000004.TIF
,FILE5=00000005.TIF
,FILE6=00000006.TIF
,